भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या *204
उत्तर देने की तारीख 03.08.2026

स्वदेशी और जनजातीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन

***204. श्री गणेश सिंह :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्ष 2014 से 2025 तक देश भर में स्वदेशी और जनजातीय संस्कृतियों, भाषाओं, कला रूपों, परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण, संवर्धन और प्रलेखन के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई प्रमुख पहलों, योजनाओं और कार्यक्रमों का ब्यौरा क्या है;

(ख) उक्त अवधि के दौरान लाभार्थियों की संख्या, सहायता प्राप्त सांस्कृतिक संस्थाओं, आयोजित किए गए उत्सवों और प्रलेखित की गई विरासत में मिली प्रथाओं सहित इन पहलों की उपलब्धियों और प्रभाव का ब्यौरा क्या है;

(ग) मध्य प्रदेश में स्वदेशी और जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए वर्तमान में कार्यान्वित की जा रही परियोजनाओं, योजनाओं और कार्यक्रमों का जिला-वार ब्यौरा क्या है; और

(घ) क्या सरकार ने सतना लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र सहित मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में स्वदेशी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए कोई परियोजना या वित्तीय सहायता स्वीकृत की है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

'स्वदेशी और जनजातीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन' के संबंध में दिनांक 03.08.2026 को माननीय संसद सदस्य श्री गणेश सिंह द्वारा पूछे गए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *204 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख): भारत सरकार ने देश की स्वदेशी और लोक/जनजातीय संस्कृतियों, कला रूपों, परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों आदि के परिरक्षण, संवर्धन और प्रलेखन के लिए सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) स्थापित किए हैं जिनके मुख्यालय पटियाला, नागपुर, उदयपुर, प्रयागराज, कोलकाता, दीमापुर और तंजावुर में स्थित हैं। ये क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र पूरे भारत में नियमित रूप से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलापों और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिसके लिए उन्हें वार्षिक सहायता अनुदान प्रदान किया जाता है। इन जेडसीसी द्वारा वर्ष 2014-2025 तक आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों / उत्सवों / कार्यकलापों, लाभान्वित कलाकारों, इन कलाकारों पर किए गए व्यय और प्रलेखित कला रूपों की संख्या निम्नानुसार है:

क्र. सं.	**वर्ष**	**आयोजित किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों/उत्सवों/कार्यकलापों की संख्या**	**लाभान्वित कलाकारों की संख्या**	**इन कलाकारों पर किया गया व्यय (लाख रुपए में)**	**प्रलेखित कला रूपों की संख्या**
i.	2014-15	1203	57018	3431.80	19
ii.	2015-16	1083	67064	3211.45	14
iii.	2016-17	1041	54896	4087.95	14
iv.	2017-18	1080	55492	5160.34	13
v.	2018-19	1373	58473	3857.50	15
vi.	2019-20	1075	60149	2925.73	09
vii.	2020-21	1178	35075	1998.32	19
viii.	2021-22	1362	60297	3079.72	19
ix.	2022-23	1483	78253	5571.11	14

x.	2023-24	1106	76443	5615.85	25
xi.	2024-25	1111	65396	5223.96	11
xii.	2025-26	1135	89025	5506.20	31
कुल		**14230**	**757581**	**49669.93**	**203**

इसके अतिरिक्त, संस्कृति मंत्रालय द्वारा इन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (जेडसीसी) के माध्यम से निम्नलिखित सांस्कृतिक कार्यक्रम/उत्सव/कार्यकलाप आयोजित किए जाते हैं/आयोजित किए गए:

राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव (आरएसएम):

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अपने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संगठन) के माध्यम से हमारे अतुल्य देश की परंपरा, संस्कृति, विरासत और समृद्ध विविधता का कीर्तिगान करने के लिए राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव (आरएसएम) आयोजित करता है। इस महोत्सव का व्यापक उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक विरासत का परिरक्षण, संवर्धन करना और उसे लोकप्रिय बनाना, युवा पीढ़ी को हमारी परंपराओं से पुन: जोड़ना तथा विविधता में एकता के माध्यम से देश और विश्व के सामने हमारी उदार सत्ता (सॉफ्ट पावर) को प्रदर्शित करना है। वर्ष 2015 से, मंत्रालय ने अपने सात जेडसीसी के माध्यम से 14 राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव (आरएसएम) और 04 क्षेत्रीय स्तर के आरएसएम का आयोजन किया है। देश के विभिन्न स्थानों पर इन आरएसएम/क्षेत्रीय आरएसएम के आयोजन के लिए विभिन्न जेडसीसी को 13,587.86 लाख रुपए की धनराशि जारी की गई थी और इन आरएसएम/क्षेत्रीय आरएसएम में कुल 12,543 कलाकारों ने भाग लिया।

काशी तमिल संगमम:

काशी तमिल संगमम कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 2022, 2023 और 2025 (तीसरा और चौथा संस्करण) के दौरान वाराणसी में किया गया था। काशी तमिल संगमम कार्यक्रम के आयोजन के लिए शिक्षा मंत्रालय नोडल प्राधिकरण था। इस कार्यक्रम के लिए सांस्कृतिक कार्यकलापों की व्यवस्था संस्कृति मंत्रालय की ओर से सभी जेडसीसी द्वारा संयुक्त रूप से की गई थी। वर्ष 2022 में 1115 कलाकारों, वर्ष 2023 में 674 कलाकारों और वर्ष 2025 के दौरान तीसरे संस्करण में 1059 कलाकारों व चौथे संस्करण में 850 कलाकारों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

माधवपुर घेड़ मेला:

माधवपुर घेड़ मेला वर्ष 2022 से 2026 तक गुजरात में आयोजित किया गया। यह मेला पश्चिमी राज्य गुजरात और उत्तर-पूर्वी राज्यों के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक साझा संबंधों का प्रतीक था। इस कार्यक्रम के लिए सांस्कृतिक कार्यकलापों का समन्वयन उत्तर पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनईजेडसीसी) द्वारा किया गया। इसमें उत्तर पूर्व क्षेत्र से 2022 में 120 कलाकारों, 2023 में 239 कलाकारों, 2024 में 45 कलाकारों, 2025 में 800 कलाकारों और 2026 में 269 कलाकारों ने भाग लिया। माधवपुर घेड़ एक छोटा लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण गाँव है, जहाँ लोक कथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण ने राजा भीष्मक की पुत्री रूक्मिणी से विवाह किया था।

सौराष्ट्र तमिल संगमम:

सौराष्ट्र तमिल संगमम का आयोजन गुजरात और तमिलनाडु राज्यों के बीच इतिहास, कला और संस्कृति के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य से संस्कृति मंत्रालय और गुजरात सरकार द्वारा संयुक्त रूप से 17 से 30 अप्रैल, 2023 तक गुजरात में किया गया। यह कार्यक्रम 3 स्थानों अर्थात सोमनाथ, द्वारका और केवडिया में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के लिए इन जेडसीसी की ओर से 250 कलाकारों की सहभागिता के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यकलापों का समन्वयन किया गया।

विविधता का अमृत महोत्सव:

'विविधता का अमृत महोत्सव' का आयोजन पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (डीओएनईआर) द्वारा संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से 2024 और 2025 में राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में किया गया। संस्कृति मंत्रालय द्वारा इस कार्यक्रम के लिए 2024 में एनईजेडसीसी (424 कलाकार) के माध्यम से और 2025 में दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एसजेडसीसी), तंजावुर (177 कलाकार) के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यकलापों के समन्वयन में सहायता प्रदान की गई।

भारतीय कला महोत्सव:

भारतीय कला महोत्सव का आयोजन वर्ष 2024 और वर्ष 2025 में राष्ट्रपति भवन और संस्कृति मंत्रालय के निदेशानुसार राष्ट्रपति निलयम, हैदराबाद में किया गया, जिसमें सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ पेश की गईं। भारत के माननीय राष्ट्रपति ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में 2024 में 250 कलाकारों और 2025 में 370 कलाकारों ने भाग लिया।

कलाग्राम:

उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर, संस्कृति मंत्रालय द्वारा मंत्रालय के प्रयागराज में स्थित एक स्वायत्त संगठन, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनसीजेडसीसी) के माध्यम से महाकुंभ क्षेत्र के सेक्टर-7 में सांस्कृतिक ग्राम अर्थात 'कलाग्राम' की स्थापना की गई थी। कलाग्राम की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थीं:

- मुख्य प्रवेश द्वार: 635 फीट चौड़ा और 54 फीट ऊंचा, जिस पर 12 ज्योतिर्लिंगों और भगवान शिव द्वारा हलाहल ग्रहण करने की कथा को दर्शाया गया; यह कला और आध्यात्मिकता का एक अनूठा संगम था।
- चार-धाम की थीम पर आधारित 104 फीट चौड़ा और 72 फीट ऊंचा मंच।
- कलाकार और प्रस्तुतियाँ: कलाग्राम सहित विभिन्न मंचों पर 14,632 कलाकारों ने प्रस्तुतियाँ पेश की।
- अनुभूति मण्डपम: स्वर्ग से धरती पर गंगा के अवतरण की कथा कहता 360° इमर्सिव अनुभव।
- अविरल शाश्वत कुंभ: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई), राष्ट्रीय अभिलेखागार (एनएआई) और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) द्वारा डिजिटल प्रदर्शनी।
- खान-पान क्षेत्र (फूड ज़ोन): प्रयागराज के स्थानीय व्यंजनों के साथ-साथ सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के सात्विक व्यंजन।
- संस्कृति आंगन: सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के 98 कारीगरों द्वारा आंगनों में पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की प्रदर्शनी और बिक्री।

आडि तिरुवातिरई महोत्सव:

संस्कृति मंत्रालय ने राजेंद्र चोल प्रथम की जयंती और दक्षिण-पूर्वी एशिया में उनकी समुद्री यात्रा के 1000वें वर्ष का स्मरणोत्सव मनाने के लिए 23 से 29 जुलाई, 2025 तक तमिलनाडु के गंगैकोंडा चोलपुरम में 'आडि तिरुवातिरई महोत्सव' का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री ने 27 जुलाई, 2025 को 30 शैव मठों के प्रमुखों (अधीनम) की उपस्थिति में इस समारोह की शोभा बढ़ाई और राजेंद्र चोल प्रथम पर स्मारक सिक्का, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित देवारम पुस्तिका और इलैयाराजा द्वारा संगीतबद्ध भगवद गीता पर एक म्यूजिक एल्बम का विमोचन किया।

इस महोत्सव में लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियाँ पेश की गईं और ओतुवारों (पारंपरिक गायक) द्वारा देवारम तिरुमुराई का पाठ किया गया, जो एक विलुप्त होती परंपरा है और तमिलनाडु के कुछ चुनिंदा शिव मंदिरों में आज भी जीवित है।

वर्ल्ड एक्सपो-2025 में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ:

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने 25 कलाकारों के प्रतिनिधिमंडल के साथ ओसाका में आयोजित वर्ल्ड एक्सपो 2025 में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत किया। इस दल द्वारा लावणी, डांडिया, पुंग चोलोम, कथक, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी और सत्रीया सहित विविध लोक और शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति के साथ-साथ ही युवा उस्तादों द्वारा वाद्य यंत्रों का वादन भी किया गया। 29 सितंबर से 4 अक्टूबर, 2025 तक आयोजित रोजाना कार्यक्रमों ने बड़ी संख्या में दर्शकों को आकर्षित किया और एक्सपो अधिकारियों ने भी इनकी काफी प्रशंसा की। भारत की भागीदारी का एक मुख्य आकर्षण 2 अक्टूबर, 2025 को एक्सपो ग्राउंड में फेस्टिवल स्टेशन ऑडिटोरियम में आयोजित गांधी जयंती समारोह था। भारत की सहभागिता को इसकी कलात्मक उत्कृष्टता और सांस्कृतिक कूटनीति में योगदान के लिए सभी से प्रशंसा मिली।

गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुति:

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर रक्षा मंत्रालय की ओर से संस्कृति मंत्रालय द्वारा वर्ष 2022, 2023 और 2024 के दौरान वंदे भारतम नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गणतंत्र दिवस परेड 2022 में 485 नर्तकों और 2023 में 479 नर्तकों को क्रमश: 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और 'नारी शक्ति' की थीम पर प्रस्तुति देने के लिए चुना गया। वर्ष 2024 की गणतंत्र दिवस परेड के दौरान, 18 से 35 वर्ष की आयु की लगभग 1500 महिला कलाकारों/नर्तकियों ने 'संकल्प से सिद्धि' थीम पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पहली बार, पारंपरिक ढोल और वाद्य यंत्र बजाकर परेड का नेतृत्व करने वाली 112 महिला हेराल्डर्स भी इस समापन समारोह का भाग थीं। रक्षा मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष संस्कृति मंत्रालय को "वंदे भारतम" नृत्य समूह के लिए एक विशेष पुरस्कार दिया गया।

भारत की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए कर्तव्य पथ, नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस समारोह, 2026 के दौरान एनजेडसीसी, पटियाला के माध्यम से एक सांस्कृतिक प्रस्तुति भी पेश की गई। संगीत नाटक अकादमी के 1,100 शास्त्रीय कलाकारों और 100 हेराल्डर्स तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के 100 प्रॉप्स होल्डर्स सहित सभी सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के लगभग 1,400 लोक कलाकारों (प्रत्येक जेडसीसी से 200 कलाकार) ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति "स्वतंत्रता का मंत्र - वन्दे मातरम्; समृद्धि का मंत्र - आत्मनिर्भर भारत" की

थीम पर तैयार की गई थी, जो राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना को दर्शाती है।

संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संगठन, **संगीत नाटक अकादमी (एसएनए)** पूरे देश में उत्सवों का आयोजन करती है; मंच कलाओं में अनुसंधान, प्रलेखन और प्रकाशन के लिए सहायता अनुदान प्रदान करती है; विषय विशेषज्ञों के संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन और उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करती है और अपने दृश्य-श्रव्य संग्रह के लिए मंच कलाओं का प्रलेखन और रिकॉर्डिंग करती है। यह अकादमी संगीत समारोहों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों आदि के आयोजन और सहायता प्रदान करने के माध्यम से प्रत्यक्ष अभ्यास द्वारा कला परंपराओं को परिरक्षित करने तथा प्रस्तुति एवं कार्यशाला के माध्यम से तकनीक व रचनात्मक प्रक्रिया विकसित करने के लिए शास्त्रीय, पारंपरिक, जनजातीय और भारतीय मंच कलाओं के अन्य रूपों को प्रस्तुत करती है।

वर्ष 2013 से, संगीत नाटक अकादमी देश के विभिन्न क्षेत्रों में 'देसज' नामक उत्सवों की श्रृंखला आयोजित कर रही है ताकि देश के लोक और जनजातीय संगीत, नृत्य और रंगमंच के क्षेत्र से जुड़े कलाकारों को बढ़ावा दिया जा सके और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सके। देसज उत्सव के अलावा, जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए अकादमी द्वारा निम्नलिखित उत्सवों का आयोजन किया जा रहा है:

- लोक जन प्रथा उत्सव: भारत की जनजातीय मंच कलाओं का कीर्तिगान।
- लोक संगम: भारत के वरिष्ठ लोक और जनजातीय कलाकारों का उत्सव।
- लोक प्रतिभा: भारत के कथात्मक और पारंपरिक कला रूपों पर केंद्रित युवा लोक और जनजातीय कलाकारों का उत्सव।

संगीत नाटक अकादमी (एसएनए) "पारंपरिक, लोक और जनजातीय मंच कलाओं का प्रशिक्षण और परिरक्षण" स्कीम संचालित करती है, जिसके अंतर्गत गुरु-शिष्य परंपरा की तर्ज पर गैर-औपचारिक और व्यक्ति विशेष के अनुरूप वातावरण में प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देते हुए, पूरे देश के संगीत, नृत्य, रंगमंच के विभिन्न चुनिंदा रूपों के साथ-साथ मंच कलाओं से जुड़े शिल्पों और संबद्ध कलाओं को सहायता प्रदान की जाती है। इस स्कीम में पारंपरिक मंच कला रूपों से जुड़े संगीत वाद्ययंत्रों और शिल्पों की प्रस्तुतियों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों हेतु भी सहायता प्रदान की जाती है।

अकादमी द्वारा "सर्वेक्षण, अनुसंधान, प्रलेखन, प्रसार और प्रकाशन" नामक एक स्कीम भी संचालित की जाती है। इस स्कीम का उद्देश्य अनुसंधान और प्रसार के उद्देश्य से विभिन्न कला रूपों की रिकॉर्डिंग को परिरक्षित करना है। यह अकादमी इस स्कीम के

अंतर्गत, देश के लोक और जनजातीय कला रूपों के अनुसंधान कार्य और प्रलेखन के लिए व्यक्तियों और सांस्कृतिक संस्थानों को अनुदान प्रदान करती है।

संगीत नाटक अकादमी ने गणतंत्र दिवस परेड 2025 के अवसर पर नई दिल्ली में कर्तव्य पथ पर आयोजित जयति जय मम: भारतम् नृत्य संरचना में देश भर के 2500 से अधिक लोक और जनजातीय कलाकारों को प्रस्तुत किया। गढ़चिरौली-चिमूर से गोंड जनजाति के पचास (50) कलाकारों को भी गणतंत्र दिवस परेड 2026 में भाग लेने के लिए शामिल किया गया।

अकादमी ने दिसंबर 2025 में लाल किला, नई दिल्ली में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए अंतर सरकारी समिति के बीसवें सत्र के अवसर पर आयोजित आईजीसी 20.कॉम में पूरे भारत से 250 से अधिक लोक और जनजातीय कलाकारों को प्रस्तुत किया।

अकादमी ने नवंबर, 2025 में डीडियापाड़ा, गुजरात में आयोजित बिरसा मुंडा जयंती के समापन समारोह के अवसर पर पूरे भारत से 250 लोक और जनजातीय कलाकारों को प्रस्तुत किया।

संगीत नाटक अकादमी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) से जुड़े सभी मामलों के लिए नोडल एजेंसी है और यह आईसीएच की राष्ट्रीय सूची का रखरखाव करती है, जिसमें आईसीएच घटकों का दृश्य-श्रव्य प्रलेखन और डिजिटलीकरण शामिल है। इसके अतिरिक्त, "भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परंपराओं की सुरक्षा" स्कीम (जो केवल 2013-2016 के बीच संचालित की जा रही थी) के भाग के रूप में प्राप्त रिपोर्ट और दृश्य-श्रव्य सामग्री संगीत नाटक अकादमी के पास डिजिटल रूप में उपलब्ध है।

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के अवसर पर, संगीत नाटक अकादमी और साहित्य अकादमी ने संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से 3 से 5 अगस्त, 2023 तक भोपाल में लोक और जनजातीय मंच कलाओं के 'उत्कर्ष' नामक भव्य उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव का उद्घाटन भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा किया गया। इस उत्सव में भारत के विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के कुल 48 समूहों और लगभग 1000 लोक एवं जनजातीय कलाकारों ने भाग लिया।

संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संस्थान **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए)** ने अपनी भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से वर्ष 2014 से 2025 की अवधि के दौरान भारत की स्वदेशी और जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण, संवर्धन, प्रलेखन और प्रसार के लिए निम्नलिखित प्रमुख पहल की हैं:

- विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में जनजातीय और स्वदेशी परंपराओं, वाचिक इतिहास, लोक कथाओं, मंच कलाओं, अनुष्ठानों, उत्सवों, शिल्पों और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का प्रलेखन, अनुसंधान और संग्रहण।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के विभिन्न शैक्षणिक प्रभागों के अंतर्गत दृश्य-श्रव्य रिकॉर्डिंग, फोटोग्राफी और डिजिटल संग्रहण के माध्यम से नृवंशविज्ञान संबंधी क्षेत्रीय प्रलेखन।
- जनजातीय समुदायों की कला, संस्कृति और ज्ञान परंपराओं को विशेष रूप से प्रदर्शित करने वाले राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यान मालाओं, उत्सवों और सांस्कृतिक वार्ताओं का आयोजन।
- जनजातीय संस्कृति और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों पर अनुसंधान मोनोग्राफ, प्रदर्शनी कैटलॉग, वृत्तचित्रों और अन्य विद्वतापूर्ण कार्यों का प्रकाशन।
- जनजातीय और लोक परंपराओं से संबंधित पांडुलिपियों, फोटोग्राफों, दुर्लभ अभिलेखीय रिकॉर्डों और दृश्य-श्रव्य सामग्री का डिजिटलीकरण और परिरक्षण।
- जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के प्रलेखन और प्रसार के लिए राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों, संग्रहालयों, सांस्कृतिक संगठनों और जनजातीय समुदायों के साथ सहयोग।
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत से संबंधित परियोजनाओं का कार्यान्वयन, जिसमें पारंपरिक मंच कलाओं, शिल्पों, वाचिक परंपराओं और सामुदायिक ज्ञान का प्रलेखन शामिल है।

भारत की जनजातीय भाषाओं को बढ़ावा देने और उन्हें परिरक्षित करने के लिए, **साहित्य अकादमी** (संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संगठन) ने एक अलग बोर्ड अर्थात वाचिक और जनजातीय साहित्य केंद्र (सीओटीएलआईटी) का गठन किया है। इस बोर्ड में विभिन्न जनजातीय भाषाओं के विशेषज्ञ शामिल हैं, जो साहित्य के प्रकाशन और जनजातीय लेखक सम्मिलन आदि जैसे कार्यक्रमों के आयोजन, दोनों के द्वारा जनजातीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए समय-समय पर उठाए जाने वाले विभिन्न कदमों और उपायों के संबंध में सुझाव देते हैं।

साहित्य अकादमी का एक भाषा विकास बोर्ड (एलडीबी) भी है, जिसमें देश की मान्यता प्राप्त और गैर-मान्यता प्राप्त, दोनों प्रकार की भाषाओं के भाषाविद विशेषज्ञ शामिल हैं।

इस बोर्ड के माध्यम से, अकादमी उन भाषाओं में महत्वपूर्ण योगदान के लिए भाषा सम्मान प्रदान करती है जो इसके द्वारा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त नहीं हैं और साथ ही शास्त्रीय व मध्यकालीन साहित्य में योगदान के लिए भी यह सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2014 से 2025 तक के लिए, अकादमी ने 16 गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं के लिए भाषा सम्मान प्रदान किया, जिनमें कुमाऊंनी, आदि, भीली, हल्बी, कुड़ुख, लद्दाखी, सौराष्ट्र, मगही, तुलु, कोशली-संबलपुरी, पैते, हरियाणवी, भोजपुरी, तिवा, मिज़ो और बुंदेली शामिल हैं और शास्त्रीय तथा मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में अन्य 20 भाषा सम्मान भी प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त, साहित्य अकादमी विभिन्न गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं के साहित्य और भाषा की समृद्धता का पता लगाने और परिरक्षित करने के लिए भाषा विकास बोर्ड के सुझावों के अनुसार विभिन्न भाषा सम्मेलनों का भी आयोजन करती है।

साथ ही, तिवा, कोशली-संबलपुरी, राभा, भोटी, कुर्माली, सादरी, सावरा, नागा, न्यिशी, बैगानी, कोरकू और खड़िया भाषाओं के 300 से अधिक जनजातीय लेखक साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित भाषा सम्मेलनों से लाभान्वित हुए हैं। इसके अतिरिक्त, 24 लेखकों को 16 गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं में भाषा सम्मान प्राप्त हुआ, जिनमें कुमाऊंनी, आदि, भीली, हल्बी, कुड़ुख, लद्दाखी, सौराष्ट्र, मगही, तुलु, कोशली-संबलपुरी, पैते, हरियाणवी, भोजपुरी, तिवा, मिज़ो और बुंदेली शामिल थीं। इसके अलावा, शास्त्रीय और मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में 20 लेखकों को 20 भाषा सम्मान प्रदान किए गए।

पिछले दो वर्षों के दौरान, संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संगठन, **राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी)** के प्रथम वर्ष के छात्रों ने मानवविज्ञान और भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत की समझ को बेहतर बनाने के लिए अपने शैक्षणिक पाठ्यक्रम के भाग के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस), भोपाल का शैक्षणिक दौरा किया। ये दौरे मध्य प्रदेश की जनजातीय विरासत और सांस्कृतिक परंपराओं पर विशेष बल के साथ जनजातीय संस्कृतियों, पारंपरिक नृत्य रूपों, लोक संगीत और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के अध्ययन पर केन्द्रित थे।

आदि रंग महोत्सव राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की एक प्रमुख पहल है जो भारत की जनजातीय मंच कलाओं और स्वदेशी सांस्कृतिक परंपराओं को परिरक्षित, संवर्धित और प्रदर्शित करने के प्रति समर्पित है। वर्ष 2013-14 में स्थापित, यह देश का पहला राष्ट्रीय उत्सव है जो विशेष रूप से जनजातीय रंगमंच और उससे जुड़े सांस्कृतिक कार्यों पर केंद्रित है। अपनी स्थापना के बाद से, देश भर में आदि रंग महोत्सव और इसके संबद्ध उत्सवों के 25 से अधिक संस्करण आयोजित किए जा चुके हैं, जिनमें 10,000 से अधिक जनजातीय कलाकारों, प्रस्तुतकर्ताओं और कारीगरों ने भाग लिया है। इस महोत्सव का आयोजन मुंबई, द्वारोन्डा (पश्चिम बंगाल), रायपुर, दमन, पोर्ट ब्लेयर,

सूरत, नासिक, चाईबासा (झारखंड), हैदराबाद, तिनसुकिया (असम), केंदुझर (ओडिशा), गोवा, शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल), खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) और नई दिल्ली सहित कई स्थानों पर किया गया है, जिससे देश भर के विविध जनजातीय समुदायों और दर्शकों तक इसकी पहुंच कायम हुई है। इस उत्सव में जनजातीय रंगमंच, संगीत, नृत्य, शिल्प, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं को शामिल किया जाता है, जो जनजातीय कलाकारों और कारीगरों को राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करता है, साथ ही भारत की समृद्ध जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को बढ़ावा देता है और उनकी आजीविका के अवसरों को बढ़ाता है।

ललित कला अकादमी (संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संगठन) ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों/शिविरों/उत्सवों का आयोजन किया है जिनमें जनजातीय कलाकारों ने भाग लिया:

- शिमला में राष्ट्रीय काष्ठ नक्काशी शिविर का आयोजन
- गंगटोक में राष्ट्रीय कला महोत्सव का आयोजन
- नई दिल्ली में राष्ट्रीय जनजातीय एवं उत्तर-पूर्व कला सम्मेलन का आयोजन
- संघ राज्य क्षेत्र जम्मू और कश्मीर में राष्ट्रीय कला महोत्सव (उत्तर-पूर्व) का आयोजन
- देहरादून में राष्ट्रीय जनजातीय कला शिविर का आयोजन
- मैक्सिको में जनजातीय कला प्रस्तुति का आयोजन
- मैक्सिको में कला प्रदर्शन का आयोजन
- मुंबई में जनजातीय कला प्रदर्शनी का आयोजन
- भुवनेश्वर में जनजातीय कलाकार कार्यशाला का आयोजन
- रांची में जनजातीय, लोक और पारंपरिक चित्रकला शिविर का आयोजन
- रांची में क्षेत्रीय जनजातीय, लोक और पारंपरिक शिविर का आयोजन
- हज़ारीबाग में जनजातीय, लोक और पारंपरिक शिविर का आयोजन
- पटना में जनजातीय, लोक और पारंपरिक चित्रकला शिविर का आयोजन
- भुवनेश्वर में जनजातीय कला सम्मेलन का आयोजन
- भुवनेश्वर में क्षेत्रीय जनजातीय चित्रकला शिविर का आयोजन

संस्कृति मंत्रालय के अधीन **भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (एएनएसआई)** अपने व्यापक मानवविज्ञान संबंधी अधिदेश के भाग के रूप में भारत की स्वदेशी और जनजातीय संस्कृतियों के परिरक्षण, संवर्धन और प्रलेखन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एएनएसआई ने अनुसंधान, क्षेत्रीय अन्वेषणों, प्रलेखन और संग्रहालय-आधारित पहलों के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत की संरक्षा में व्यापक स्तर पर योगदान दिया है। लोक कलाओं और शिल्प परंपराओं का व्यवस्थित प्रलेखन एएनएसआई का मुख्य योगदान है। एएनएसआई ने वारली पेंटिंग्स, गोंड भित्ति चित्रकला और जनजातीय संगीत वाद्ययंत्रों जैसी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को रिकॉर्ड और परिरक्षित किया है, जबकि विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं ने मूर्त और सांस्कृतिक दोनों विरासतों के मानचित्रण पर ध्यान केंद्रित किया है, जिससे सामुदायिक परंपराओं का परिरक्षण सुदृढ़ हुआ है।

एएनएसआई ने संकटापन्न मंच कलाओं और वाचिक परंपराओं को प्रलेखित करने वाली नृवंशविज्ञान संबंधी फिल्मों का निर्माण करके दृश्य मानवविज्ञान के माध्यम से स्वदेशी सांस्कृतिक प्रचलनों को भी बढ़ावा दिया है। ऐसी ही एक पहल पश्चिम बंगाल की बेनीपुतुल ग्लव-पपेट परंपरा का प्रलेखन है, जिसने पारंपरिक ज्ञान के परिरक्षण में योगदान दिया है और भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत के प्रति जनता की जागरूकता को बढ़ाया है।

पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के क्षेत्र में, एएनएसआई स्वदेशी पारिस्थितिकीय ज्ञान प्रणाली, टिकाऊ संसाधन प्रबंधन और समुदाय-आधारित पद्धतियों पर शोध करता है। अंडमान और निकोबार क्षेत्रीय केंद्र सहित एएनएसआई के क्षेत्रीय केंद्रों ने पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के अध्ययन को प्राथमिकता दी है, जबकि सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाओं ने जनजातीय ज्ञान और प्रथागत तौर-तरीकों का और अधिक प्रलेखन किया है।

इसके अतिरिक्त, एएनएसआई के संग्रहालय जनजातीय जीवन और विभिन्न तत्वों सहित सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करके सांस्कृतिक विरासत को सहयोग प्रदान करते हैं।

संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान, **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस), भोपाल** की स्थापना विशेष रूप से जनजातीय और स्वदेशी समुदायों पर बल देते हुए भारत के लोगों की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, प्रलेखन, अनुसंधान, व्याख्या और प्रसार के उद्देश्य से की गई थी। यह संग्रहालय मुक्ताकाश प्रदर्शनियों, इनडोर दीर्घाओं, नृवंशविज्ञान संग्रहों, फील्ड प्रलेखन, अनुसंधान, प्रकाशनों, शैक्षिक पहुंच और सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाता है।

आईजीआरएमएस नृवंशविज्ञान विरासत के राष्ट्रीय संग्रह के रूप में कार्य करता है और संग्रहालयों, शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक संगठनों और स्वदेशी समुदायों के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर मूर्त और अमूर्त, दोनों सांस्कृतिक परंपराओं के परिरक्षण के लिए मंच प्रदान करता है। जनजातीय और स्वदेशी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को परिरक्षित, संवर्धित और प्रसारित करने के लिए, आईजीआरएमएस अनेक प्रकार के कार्यकलाप संचालित करता है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- राष्ट्रीय जनजातीय नृत्य महोत्सव: एससीएसटीआरटीआई भुवनेश्वर के साथ एक सहयोगात्मक प्रयास के रूप में वर्ष 2015 में शुरू किया गया।
- जनजातीय फ्यूजन संगीत: स्वदेशी संगीत समावेश का जश्न मनाने के लिए वर्ष 2016 में शुरू किया गया कार्यक्रम।
- ओरिहा उत्सव: आईजीआरएमएस परिसर में अरुणाचल प्रदेश की वांचो जनजाति का उत्सव मनाया गया।
- जनजातीय साहित्य महोत्सव (टीएलएफ): जनजातीय भारत की भाषा और साहित्य को परिरक्षित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर इसकी शुरुआत की गई।
- कलाकार शिविर (2017): मैसूरु में जनजातीय चिकित्सकों, असम में काष्ठ नक्काशी और मणिपुर में कपड़ा बुनाई सहित 13 कार्यशालाओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
- रेह उत्सव का प्रलेखन: वर्ष 2017 में अरुणाचल प्रदेश की इदु मिशमी जनजाति के पारंपरिक रेह उत्सव का प्रलेखन किया गया।
- साप्ताहिक बाजार प्रलेखन: असम के जनजातीय साप्ताहिक बाजारों का व्यापक फील्ड प्रलेखन किया गया।
- स्वदेशी जन दिवस: वर्ष 2018 से शुरुआत करते हुए प्रदर्शनियों, व्याख्यानों और संगोष्ठियों के माध्यम से प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय स्वदेशी जन दिवस मनाया गया।
- गुंजार उत्सव: एक स्वदेशी संगीत और सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें प्रधान गोंड जनजाति के 'बाना' तंतु वाद्य के साथ-साथ कालबेलिया और चकरी नृत्य प्रस्तुत किए गए।
- चित्रलिपि कार्यक्रम: प्रसिद्ध दिवंगत गोंड कलाकार श्री जनगढ़ सिंह श्याम की कृतियों को सम्मानित करने के लिए नौ समुदायों को शामिल करते हुए एक जनजातीय चित्रकला पहल की शुरुआत की गई।

- डिजिटल कोविड प्रतिक्रिया (2020): महामारी के दौरान संग्रहालय के संग्रह और परिरक्षित जनजातीय घरों के प्रकारों को प्रदर्शित करने वाले ऑनलाइन वीडियो जारी किए गए।

- आजादी का अमृत महोत्सव (2021): चित्रकला, काष्ठ नक्काशी, बांस, बेंत शिल्प, कुंभकारी और वस्त्र परंपराओं को प्रदर्शित करने वाली जनजातीय कलाकारों की कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

- देसज प्रदर्शनी: जनजातीय कलाकारों को सहायता देने और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी तकनीक पर केंद्रित एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- जनजातीय गौरव दिवस (2022): महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में इस दिवस की शुरुआत की गई और इसे मनाया गया।

- जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी: जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को उजागर करने वाली एक समर्पित प्रदर्शनी प्रबंधित और आयोजित की गई।

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "जनजातीय अनुसंधान संस्थानों को सहायता (टीआरआई)" नामक स्कीम संचालित की जाती है, जिसके अंतर्गत राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के जनजातीय अनुसंधान संस्थानों को अनुसंधान और प्रलेखन (जिसमें जनजातीय कला, शिल्प, व्यंजन, चिकित्सा, लोककथाओं, भाषाओं और प्रथागत तौर-तरीकों पर अध्ययन शामिल हैं), प्रशिक्षण/सेमीनार/कार्यशाला/सम्मेलन, व्यावहारिक अनुसंधान, दौरों का आदान-प्रदान, जनजातीय उत्सव, वृत्तचित्र/दृश्य-श्रव्य प्रलेखन, जनजातीय संग्रहालयों और पुस्तकालयों की स्थापना व सुदृढ़ीकरण तथा टीआरआई भवनों के निर्माण/नवीनीकरण जैसे कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस स्कीम के अंतर्गत, जनजातीय कार्य मंत्रालय ने निम्नलिखित को सहायता प्रदान की है:

- सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में कुल 3,505 कार्यकलापों/परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है/शुरू किया गया है, जिसके लिए लगभग 1,072.31 करोड़ रुपए का कुल परिव्यय किया गया।

- देश भर में 415 जनजातीय उत्सवों का आयोजन किया गया।

- 1,188 अनुसंधान और प्रलेखन अध्ययन किए गए हैं, जिनमें जनजातीय कला, शिल्प, व्यंजन, चिकित्सा, लोककथाओं, प्रथागत तौर-तरीकों और भाषाओं को शामिल किया गया।

- क्षमता निर्माण और जागरूकता के लिए 868 प्रशिक्षण/सेमिनार/कार्यशाला/सम्मेलन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

- राज्य स्तर पर सांस्कृतिक संस्थानों को मजबूत बनाने के लिए 193 जनजातीय संग्रहालय निर्माण/नवीनीकरण परियोजनाओं और 121 टीआरआई भवन निर्माण/नवीनीकरण परियोजनाओं को मंजूरी दी गई।

  जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा "जनजातीय अनुसंधान, सूचना, शिक्षा, संचार और कार्यक्रम (टीआरआई-ईसीई) स्कीम" भी संचालित की जाती है, जिसके अंतर्गत प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों को विशिष्ट व गहन अनुसंधान अध्ययन, प्रलेखन, जनजातीय कल्याण योजनाओं के मूल्यांकन और आजीविका, स्वास्थ्य व पोषण, जनजातीय चिकित्सा पद्धतियों, शिक्षा, डिजिटल समावेशन, जनजातीय प्रथागत कानूनों जैसे विषयों पर क्षमता निर्माण कार्यों तथा जनजातीय कला, संस्कृति, वाचिक परंपराओं व भाषाओं के प्रलेखन के लिए उत्कृष्टता केंद्र (इस स्कीम का एक प्रमुख घटक) के रूप में मान्यता प्रदान की जाती है। यह स्कीम ऐसे अनुसंधान और प्रलेखन कार्यों के लिए विज्ञापन/प्रचार, आईईसी कार्यकलापों और सहायता अनुदान का भी समर्थन करती है। सभी प्रमुख विषयों को कवर करने वाली 100 से अधिक अन्य परियोजनाओं सहित 75 से अधिक संस्थाओं/संगठनों को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

(ग) और (घ): संस्कृति मंत्रालय केंद्रीय क्षेत्र की विभिन्न स्कीमें संचालित करता है, जिनमें मध्य प्रदेश राज्य सहित देश के विभिन्न राज्यों के लाभार्थियों (सांस्कृतिक संगठन/गैर सरकारी संगठन/कलाकार) को सीधे वित्तीय सहायता जारी की जाती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है:

i. **गुरु-शिष्य परंपरा (रेपर्टरी अनुदान) के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता :** इस स्कीम घटक का उद्देश्य नाट्य समूहों, रंगमंच समूहों, संगीत मंडलियों, बाल रंगमंच आदि जैसे मंचकला कार्यकलापों की सभी शैलियों तथा गुरु-शिष्य परंपरा के अनुरूप कलाकारों को उनके संबंधित गुरु द्वारा नियमित आधार पर प्रशिक्षण देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस स्कीम के अनुसार, सभी कला रूपों में 1 गुरु और अधिकतम 18 शिष्यों को सहायता प्रदान की जाती है। इस स्कीम के अंतर्गत वर्ष 2014 से 2025 तक मध्य प्रदेश राज्य के संबंध में लाभार्थियों की संख्या और जारी किए गए अनुदान/संवितरित निधियों का ब्यौरा इस प्रकार है:

क्र. सं.	**वर्ष**	**संगठनों की संख्या**	**राशि (लाख रुपए में)**
i.	2014-15	20	123.76
ii.	2015-16	31	240.00
iii.	2016-17	27	156.48
iv.	2017-18	25	204.00
v.	2018-19	21	149.04
vi.	2019-20	33	231.33

vii.	2020-21	42	294.12
viii.	2021-22	34	236.58
ix.	2022-23	73	525.48
x.	2023-24	106	687.19
xi.	2024-25	69	654.78
xii	2025-26	175	1315.85
कुल		**656**	**4818.61**

वर्ष 2024-25 और 2025-26 के लिए, विगत वर्षों की कुछ बकाया राशि का संवितरण प्रत्यक्ष लाभ अंतरण मोड के माध्यम से किया गया था।

ii. **राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता :** इस स्कीम घटक का उद्देश्य पूरे देश में कला और संस्कृति के संवर्धन हेतु कार्यरत राष्ट्रीय महत्व के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संगठनों को बढ़ावा देना और सहायता प्रदान करना है। यह अनुदान उन संगठनों को दिया जाता है जिनका एक सुगठित प्रबंधन निकाय हो, जो भारत में पंजीकृत हो, जो अखिल भारतीय स्तर पर प्रचालन करते हुए राष्ट्रीय महत्व के हों; जिनके पास पर्याप्त कार्यबल हो और जिन्होंने विगत 5 वर्षों में से 3 वर्षों के दौरान सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए 1.00 करोड़ रुपए या उससे अधिक का व्यय किया हो। इस स्कीम के अंतर्गत वर्ष 2014 से 2025 तक मध्य प्रदेश राज्य के संबंध में लाभार्थियों की संख्या और जारी किए गए अनुदान/संवितरित निधियों का ब्यौरा इस प्रकार है:

क्र. सं.	**वर्ष**	**संगठनों की संख्या**	**राशि (लाख रुपए में)**
i.	2014-15	0	0.00
ii.	2015-16	0	0.00
iii.	2016-17	0	0.00
iv.	2017-18	1	41.25
v.	2018-19	0	0.00
vi.	2019-20	0	0.00
vii.	2020-21	0	0.00
viii.	2021-22	0	0.00
ix.	2022-23	1	0.59
x.	2023-24	0	0.00
xi.	2024-25	0	0.00
xii	2025-26	0	0.00

कुल	**2**	**41.84**

iii. **सांस्कृतिक समारोह और निर्माण अनुदान (सीएफपीजी) :** इस स्कीम घटक का उद्देश्य गैर-सरकारी संगठनों/सोसाइटियों/न्यासों/विश्वविद्यालयों आदि को संगोष्ठियों, सम्मेलन, शोध कार्य, कार्यशालाओं, महोत्सवों, प्रदर्शनियों, विचार-गोष्ठियों, नृत्य नाटक-रंगमंच, संगीत सृजन आदि के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस स्कीम के अंतर्गत वर्ष 2014 से 2025 तक मध्य प्रदेश राज्य के संबंध में लाभार्थियों की संख्या और जारी किए गए अनुदान/संवितरित निधियों का ब्यौरा इस प्रकार है:

क्र. सं.	**वर्ष**	**संगठनों की संख्या**	**राशि (लाख रुपए में)**
i.	2014-15	29	75.50
ii.	2015-16	32	62.75
iii.	2016-17	71	86.06
iv.	2017-18	75	86.20
v.	2018-19	167	221.93
vi.	2019-20	51	47.59
vii.	2020-21	77	79.78
viii.	2021-22	94	200.42
ix.	2022-23	141	264.90
x.	2023-24	161	155.17
xi.	2024-25	100	202.89
xii	2025-26	196	414.86
कुल		**1194**	**1898.05**

iv. **वयोवृद्ध कलाकारों हेतु वित्तीय सहायता :** इस स्कीम का उद्देश्य 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के उन वयोवृद्ध कलाकारों और विद्वतजन को 6000/- रुपए प्रति माह की वित्तीय सहायता प्रदान करना है जिनकी वार्षिक आय 72,000/- रुपए से कम है और जिन्होंने कला, साहित्य आदि के उनके विशिष्ट क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। लाभार्थी की मृत्यु हो जाने पर, यह वित्तीय सहायता उनके पति/पत्नी को अंतरित कर दी जाती है। इस स्कीम के अंतर्गत वर्ष 2014 से 2025 तक मध्य प्रदेश राज्य के संबंध में लाभार्थियों की संख्या और जारी किए गए अनुदान/संवितरित निधियों का ब्यौरा इस प्रकार है:

क्र. सं.	वर्ष	संगठनों की संख्या	राशि (लाख रुपए में)
i.	2018-19	45	2.64
ii.	2019-20	16	5.41
iii.	2020-21	06	2.44
iv.	2021-22	12	5.04
v.	2022-23	06	3.86
vi.	2023-24	07	6.95
vii.	2024-25	13	14.94
viii.	2025-26	15	25.68
कुल		**120**	**66.96**

वर्ष 2017-18 तक चयनित कलाकारों को वित्तीय सहायता संवितरित किए जाने के कार्य की देखभाल एलआईसी द्वारा की जाती थी, जिसने राज्य-वार डेटा का रखरखाव नहीं किया।

v. **संस्कृति के क्षेत्रों में उत्कृष्ट व्यक्तियों को वरिष्ठ/कनिष्ठ अध्येतावृत्तियां प्रदान करना:** इस स्कीम का उद्देश्य हमारी कुछ पारंपरिक कला रूपों के पुनरुद्धार के लिए अति उन्नत प्रशिक्षण या व्यक्तिगत रचनात्मक प्रयास हेतु बुनियादी वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह स्कीम संस्कृति के विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने के लिए है। इस स्कीम में ग्रामीण/जनजातीय क्षेत्रों के कलाकारों को भी शामिल किया जाएगा। यह अध्येतावृत्ति अनुसंधान-उन्मुख परियोजनाओं को शुरू करने के लिए दी जाती है। आवेदक को परियोजना पर कार्य करने के लिए अपनी क्षमताओं का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा। यह अध्येतावृत्ति 2 वर्षों के लिए प्रदान की जाती है और अनुदान का संवितरण डीबीटी मोड के माध्यम से छमाही आधार पर किया जाता है। इस स्कीम के तहत वर्ष 2014 से 2025 तक मध्य प्रदेश राज्य के संबंध में अध्येताओं की संख्या और जारी किए गए अनुदान/संवितरित धनराशि का विवरण इस प्रकार है:

क्र. सं.	वर्ष	अध्येताओं की संख्या	राशि (लाख रुपए में)
i.	2014-15	17	10.20
ii.	2015-16	44	52.80
iii.	2016-17	24	20.40
iv.	2017-18	23	22.20
v.	2018-19	70	79.20
vi.	2019-20	70	56.40
vii.	2020-21	67	64.20

viii.	2021-22	67	104.40
ix.	2022-23	62	93.00
x.	2023-24	82	76.20
xi.	2024-25	59	70.20
xii	2025-26	136	183.60
कुल		**721**	**832.80**

vi. **विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति प्रदान करना:** इस स्कीम का उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत, भारतीय शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच, मूकअभिनय, दृश्य कला, लोक, पारंपरिक एवं स्वदेशी कलाओं और सुगम शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भारत के भीतर उन्नत प्रशिक्षण के लिए उत्कृष्ट प्रतिभा वाले युवा कलाकारों को सहायता प्रदान करना है। प्रत्येक बैच वर्ष में अधिकतम 400 छात्रों का चयन किया जाता है। यह छात्रवृत्ति 2 वर्षों के लिए प्रदान की जाती है और इसका संवितरण डीबीटी मोड के माध्यम से छमाही आधार पर किया जाता है। स्कीम के तहत वर्ष 2014 से 2025 तक मध्य प्रदेश राज्य के संबंध में स्कॉलरों की संख्या और जारी किए गए अनुदान/ संवितरित धनराशि का विवरण इस प्रकार है:

क्र. सं.	**वर्ष**	**स्कॉलरों की संख्या**	**राशि (लाख रुपए में)**
i.	2014-15	134	70.80
ii.	2015-16	156	62.40
iii.	2016-17	67	20.10
iv.	2017-18	28	8.40
v.	2018-19	90	27.00
vi.	2019-20	105	31.50
vii.	2020-21	120	36.00
viii.	2021-22	128	38.40
ix.	2022-23	27	8.10
x.	2023-24	131	39.30
xi.	2024-25	104	31.80
xii	2025-26	178	53.70
कुल		**1268**	**427.50**

इसके अतिरिक्त, दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एससीजेडसीसी), नागपुर (संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संगठन) द्वारा मध्य प्रदेश में आयोजित किए गए सांस्कृतिक कार्यकलाप/कार्यक्रम निम्नानुसार हैं:

- जबलपुर जिले में मराठी संगीत नाटक महोत्सव

- छतरपुर जिले में पखावज कार्यशाला, खजूर शिल्प कला कार्यशाला और बांस शिल्प कार्यशाला
- बुरहानपुर जिले में कथक नृत्य कार्यशाला और पोर्ट्रेट पेंटिंग कार्यशाला
- खंडवा जिले में गजल एवं ठुमरी कार्यशाला और लैंडस्केप पेंटिंग कार्यशाला

हाल ही में, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनसीजेडसीसी), प्रयागराज (संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संगठन) ने जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल द्वारा 27 से 29 जून, 2026 तक आयोजित महुआ उत्सव में भाग लेने के लिए मध्य प्रदेश से गादली नृत्य और गुदुम बाजा जैसी सांस्कृतिक मंडलियों को प्रायोजित किया है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस), भोपाल के सहयोग से वर्ष 2025 में एक बाल रंगमंच कार्यशाला का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य रंगमंच-आधारित शिक्षण और संवादात्मक कार्यकलापों के माध्यम से बच्चों में रचनात्मकता, नाट्य कौशल और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देना था।

आईजीएनसीए ने मध्य प्रदेश राज्य में विभिन्न जनजातीय समुदायों की जनजातीय कला, वाचिक परंपराओं, लोक प्रस्तुतियों, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और सांस्कृतिक प्रथाओं के प्रलेखन का कार्य किया है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय की टीआरआई को सहायता स्कीम के अंतर्गत जनजातीय अनुसंधान संस्थान, मध्य प्रदेश ने लगभग 63.81 करोड़ रुपए के कुल बजट के साथ 188 कार्यकलापों/परियोजनाओं की शुरुआत की है जिसमें अनुसंधान एवं प्रलेखन, प्रशिक्षण/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं, जनजातीय उत्सव, पारस्परिक दौरे, संग्रहालय एवं टीआरआई भवन निर्माण कार्य, वृत्तचित्र और पुस्तकालय सुदृढ़ीकरण शामिल हैं। मध्य प्रदेश में जनजातीय संस्कृति, शिल्प और विरासत को विशेष रूप से बढ़ावा देने से संबंधित कुछ प्रमुख परियोजनाएं इस प्रकार हैं:

- निमाड़ और मालवा के जनजातीय बहुल जिलों में लोकप्रिय भगोरिया उत्सव का विशेष आयोजन।
- बैतुल, खंडवा, जबलपुर और इंदौर में आदिरंग/आदिमहोत्सव जनजातीय उत्सव कार्यक्रम का आयोजन।
- कोल, कोरकू और सहरिया जनजातियों के पारंपरिक व्यंजनों पर पाक कला विरासत कार्यशाला।

- आईजीआरएमएस, भोपाल के सहयोग से मध्य प्रदेश में जनजातीय समुदायों से संबंधित संस्कृति और सिनेमा की कार्यशाला-सह-फिल्म महोत्सव।
- आईआईएम इंदौर के सहयोग से "रचनात्मकता को बनाए रखना: हस्तशिल्प में सांस्कृतिक संरक्षण और उद्यमिता के माध्यम से मध्य प्रदेश के जनजातीय कारीगरों को सशक्त बनाना" विषय पर अनुसंधान प्रस्ताव।
- गोंड, कोरकू और भील जनजातियों की लोककथाओं और लोकसाहित्य का अध्ययन और प्रलेखन।
- पारंपरिक जनजातीय लकड़ी, बांस और मिट्टी के शिल्प पर तथा आदिरंग/आदिराग जैसे जनजातीय उत्सवों पर कार्यशालाएं/संगोष्ठियां।
- बालाघाट जिले और इंदौर मंडल में आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव नृत्य उत्सव, शिल्प मेले, फोटो गैलरी और खान-पान मेले।

इसके अतिरिक्त, मध्य प्रदेश में स्थित अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान, भोपाल, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय (आईजीएनटीयू), अमरकंटक और स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए), भोपाल जैसे उत्कृष्टता केंद्रों (सीओई) ने जनजातीय कार्य मंत्रालय की टीआरआई-ईसीई स्कीम के अंतर्गत जनजातीय स्वास्थ्य, जातीय-चिकित्सा, जनजातीय संस्कृति और संवहनीय जनजातीय आवास नियोजन पर उत्कृष्टता केंद्र अनुसंधान कार्य किए हैं।

जनजातीय कार्य मंत्रालय ने जनजातीय अनुसंधान संस्थान, मध्य प्रदेश के माध्यम से टीआरआई हेतु सहायता स्कीम के अंतर्गत सतना जिले सहित विंध्य क्षेत्र को विशेष रूप से कवर करने वाली निम्नलिखित परियोजना को संस्वीकृत किया है:

वित्तीय वर्ष	**परियोजना का नाम**	**कार्यकलाप**	**संस्वीकृत राशि**
2024-25	वीडियो प्रलेखन: कोल जनजाति (सतना और रीवा) के जीवन, जीवन शैली, संस्कृति और प्राकृतिक पर्यावरण पर आधारित एक लघु फिल्म	वृत्तचित्र / ऑडियो/वीडियो	15.00 लाख रुपए

इसके अतिरिक्त, भोपाल स्थित भारत भवन रंग मंडल में एक रंग-मंडली को बहाल करने के लिए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) और मध्य प्रदेश सरकार के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस पहल का उद्देश्य रंगमंच कार्यकलापों को बढ़ावा देना, स्वदेशी और जनजातीय मंच कलाओं का परिरक्षण

और प्रदर्शन करना तथा क्षेत्र में सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करना है।

*****